

## कुमारियों को भट्टी में प्राण अव्यक्त बापदादा के मधुर महावाक्य

आज बापदादा सब बच्चों से कहाँ मिलन मना रहे हैं? किस स्थान पर बैठे हो? सागर और नदियों के मिलन स्थान पर मिलन मना रहे हैं। सागर का कण्ठा पसन्द आता है ना। सिर्फ सागर नहीं लेकिन अनेक नदियों का सागर के साथ मिलन स्थान कितना श्रेष्ठ होगा। सागर को भी नदियों का मिलन कितना प्यारा लगता है। ऐसा मिलन मेला फिर किसी युग में होगा? इस युग का मिलन सारा कल्प भिन्न-भिन्न रूप और रीति से गाया मनाया जायेगा। ऐसा मेला मनाने के लिए आये हो ना, यहाँ वहाँ से इसलिए भागे हो ना। सागर में समाए, समान मास्टर ज्ञान सागर बन जाते हो अर्थात् बाप समान बेहद के स्वरूप में स्थित हो जाते हो। ऐसा बेहद का अनुभव करते हो? बेहद की वृत्ति अर्थात् सर्व आत्माओं के प्रति कल्याण की वृत्ति – मास्टर विश्व कल्याणकारी। सिर्फ अपने वा अपने हृद के निमित्त बनी हुई आत्माओं के कल्याण अर्थ नहीं, लेकिन सर्व के कल्याण की वृत्ति हो। मैं तो ब्रह्माकुमारी बन गई, पवित्र आत्मा बन गई – अपनी उन्नति में, अपनी प्राप्ति में, अपने प्रति सन्तुष्टता में राजी होकर चल रहे हैं, यह बाप सामन बेहद की वृत्ति रखने की स्थिति नहीं है। हृद की वृत्ति अर्थात् सिर्फ स्वयं प्रति सन्तुष्टता की वृत्ति। क्या यहाँ तक ही सिर्फ रहना है वा आगे बढ़ना है? कई बच्चे बेहद की सेवा का समय, बेहद की प्राप्ति का समय, बाप समान बनने का गोल्डन चान्स वा गोल्डन मैडल लेने के बजाए, मैं ठीक चल रही हूँ, कोई गलती नहीं करती, लौकिक, अलौकिक जीवन दोनों अच्छा निभा रही हूँ, कोई खिट-खिट नहीं, कोई संगठन के संस्कारों का टक्कर नहीं, इसी सिलवर मैडल में ही खुश हो जाते हैं। बाप समान बेहद की वृत्ति तो नहीं रही ना। बाप विश्व कल्याणकारी और बच्चे – स्व कल्याणकारी, ऐसी जोड़ी अच्छी लगेगी? सुनने में अच्छी नहीं लग रही है। और जब बनकर चलते हो तब अच्छी लगती है? सर्व खजानों के मालिक के बालक खजानों के महादानी नहीं बने तो उसको क्या कहा जायेगा? किसी से भी पूछो तो बाप के सर्व खजानों के वर्से के अधिकारी हो? तो सब हाँ कहेंगे ना! खजाना किसलिए मिला है? सिर्फ स्वयं खाओ पियो और अपनी मौज में रहो, इसलिए मिला है? बाँटो और बढ़ाओ, यही डायरेक्शन मिले हैं ना। तो कैसे बाँटेंगे? गीता पाठशाला खोल ली वा जब चांस मिला तब बाँट लिया, इसमें ही सन्तुष्ट हो? बेहद के बाप से बेहद की प्राप्ति और बेहद की सेवा के उमंग-उत्साह में रहना है। कुमारी जीवन संगमयुग में सर्व श्रेष्ठ वरदानी जीवन है। तो ऐसी वरदानी जीवन ड्रामा अनुसार आप विशेष आत्माओं को स्वतः प्राप्त है। ऐसी वरदानी जीवन सर्व को वरदान, महादान देने में लगा रहे हो? स्वतः प्राप्त हुए वरदान की लकीर श्रेष्ठ कर्म की कलम द्वारा जितनी बड़ी खींचने चाहो उतनी खींच सकते हो। यह भी इस समय को वरदान है। समय भी वरदानी, कुमारी जीवन भी वरदानी, बाप भी वरदाता। कार्य भी वरदान देने का है। तो इसका पूरा पूरा लाभ लिया है? 21 जन्मों तक लम्बी लकीर खींचने का चांस, 21 पीढ़ी सदा सम्पन्न बनने का चान्स जो मिला है वह ले लिया? कुमारी जीवन में जितना चाहो कर सकते हो। स्वतंत्र आत्मा का भाग्य प्राप्त है। अपने से पूछो – स्वतन्त्र हो या परतंत्र हो? परतंत्रता के बन्धन अपने ही मन के व्यर्थ कमजोर संकल्पों की जाल है। उसी रची हुई जाल में स्वयं को परतंत्र तो नहीं बना रहो हो? क्वेश्चन की जाल है? जो जाल रचते हो उसका चित्र निकालो तो क्वेश्चन का ही रूप होगा। क्वेश्चन क्या उठते हैं, अनुभवी हो ना। क्या होगा, कैसे होगा, ऐसे तो नहीं होगा, यह है जाल। पहले भी सुनाया था – संगमयुगी ब्राह्मणों का एक ही सदा समर्थ संकल्प है कि – ‘जो होगा वह कल्याणकारी होगा। जो होगा श्रेष्ठ होगा, अच्छे ते अच्छा होगा।’ यह संकल्प है जाल को समाप्त करने का। जबकि बुरे दिन, अकल्याण के दिन समाप्त हो गये। संगमयुग का हर दिन बड़ा दिन है, बुरा दिन नहीं। हर दिन आपका उत्सव है ना। हर दिन मनाने का है। इस समर्थ संकल्प से व्यर्थ संकल्पों की जाल को समाप्त करो।

कुमारियाँ तो बापदादा की, ब्राह्मण कुल की शान हैं। फर्स्ट चान्स कुमारियाँ को मिलता है। पाण्डव हँसते हैं कि छोटी-छोटी कुमारियाँ टीचर बन जातीं, दादी बन जाती, दीदी बन जाती। तो इतना चान्स मिलता है। फिर भी चान्स न लें तो क्या कहेंगे! क्या बोलती हो, पता है? सहयोगी रहेंगे लेकिन समर्पण नहीं होंगे। जो समर्पण नहीं होंगे वह समान कैसे बनेंगे! बाप ने क्या किया? सब कुछ समर्पित किया ना वा सिर्फ सहयोगी बना? ब्रह्मा बाप ने क्या किया? समर्पण किया वा सिर्फ सहयोगी रहा? जगत अम्बा ने क्या किया? वह भी कन्या ही रही ना। तो फालो फादर मदर करना है वा एक दो में सिस्टर्स फालो करते हो। “इसका जीवन देखकर मुझे भी यही अच्छा लगता है।” तो फालो सिस्टर्स हो गया ना! अब क्या

करेंगी? डर सिर्फ अपनी कमजोरी से होता है और किसी से नहीं होता। अब क्या लेंगी? गोल्डन मैडल लेंगी वा सिलवर ही ठीक है? कमजोरियों को नहीं देखो। वह देखेंगी तो डरेंगी। न स्वयं कमजोर बनो, न दूसरों की कमजोरियों को देखो। समझा, क्या करना है!

बापदादा को तो कुमारियाँ देख करके खुशी होती है। लोगों के पास कुमारी आती है तो दुःख होता है। और बापदादा के पास जितनी कुमारियाँ आवें उतना ज्यादा से ज्यादा खुशी मनाते हैं क्योंकि बापदादा जानते हैं कि हर कुमारी विश्व कल्याणकारी, महादानी, वरदानी है। तो समझा कुमारी जीवन का महत्व कितना है। आज विशेष कुमारियों का दिन है ना। भारत में अष्टमी पर कुमारियों को खास बुलाते हैं। तो बापदादा भी अष्टमी मना रहे हैं। हर कन्या अष्ट शक्ति स्वरूप है। अच्छा –

ऐसे सर्व श्रेष्ठ वरदानी जीवन अधिकारी, गोल्डन चांस अधिकारी, 21 पीढ़ी की श्रेष्ठ तकदीर की लकीर खींचने के अधिकारी, स्वतंत्र आत्मा के वरदान अधिकारी, ऐसे शिव वंशी ब्रह्माकुमारियों, श्रेष्ठ कुमारियों को विशेष रूप में और साथ-साथ सर्व मिलन मनाने वाले पद्मापदम भाग्यवान आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

**कर्मभोग पर कर्मयोग की विजय** – कर्मभोग पर विजय पाने वाले विजयी रत्न हो ना! वे कर्मभोग भोगने वाले होते और आप कर्मयोगी हो। भोगने वाले नहीं हो लेकिन सदा के लिए भस्म करने वाले हो। ऐसा भस्म करते हो जो 21 जन्म कर्मभोग का नाम निशान न रहे। आयेगा तब तो भस्म करेंगे? आयेगा जरूर लेकिन आता है, भस्म होने के लिए न कि भोगने के लिए। विदाई लेने के लिए आता है क्योंकि कर्मभोग को भी पता है कि हम अभी ही आ सकते हैं फिर नहीं आ सकते इसलिए थोड़ा-थोड़ा बीच में चाँस लेता है। जब देखता है कि यहाँ तो दाल गलने वाली नहीं है तो वापस चला जाता है।

**दादी दीदी को देखते हुए** – इतने हैण्डस देखकर खुशी हो रही है ना? जो स्वप्न देख रही थी वो साकार हो गया ना। इतने हैण्डस हों, इतने सेन्टर बढ़ें, यह स्वप्न देख रही थी ना क्योंकि हैण्डस की दादी दीदी को सबसे ज्यादा आश रहती है। तो इतने सब बने बनाये हैण्डस देखकर खुशी होगी ना। भारत की कुमारियों में और विदेश की कुमारियों में भी अन्तर है, इन्हें कमाई की क्या आवश्यकता है! (डिग्री लेनी है) जब तक सेवा में प्रैक्टिस नहीं की है तब तक डिग्री की भी वैल्यु नहीं है। डिग्री की वैल्यु सेवा से है। पढ़ाई पढ़कर कार्य में नहीं लगाया, पढ़ाई के बाद भी गृहस्थी में रहे तो लौकिक में भी कहते हैं, पढ़ाई से क्या लाभ। अनपढ़ भी बच्चे सम्भालते और यह भी सम्भालते तो फ़र्क क्या हुआ। ऐसे ही यह भी पढ़कर अगर स्टेज पर आ जाएं जो डिग्री की वैल्यु भी है। अगर यहाँ चांस मिलता है तो डिग्री आप ही मिल जायेगी। यह डिग्री कम है क्या! जगदम्बा सरस्वती को कितनी बड़ी डिग्री मिली। यहाँ की डिग्री तो वर्णन भी नहीं कर सकते हो। कितनी बड़ी डिग्री मिली है - मास्टर ज्ञान सागर, मास्टर सर्वशक्तिमान कितनी डिग्री हैं! इसमें एम.ए., बी.ए. सब आ जाता है। इंजीनियर, डाक्टर सब आ जायेगा। अच्छा।

### कुमारियों के अलग-अलग ग्रुप से बापदादा की मुलाकात

1. वरदानी कुमारियाँ हो ना! धीरे-धीरे चलने वाली हो या उड़ने वाली हो? उड़ने वाली अर्थात् हृद की धरनी को छोड़ने वाली। जब धरनी को छोड़ें तब उड़ेंगी ना! नीचे तो नहीं उड़ेंगी। नीचे वाले को शिकारी पकड़ लेते हैं। नीचे आया पिंजरे में फंसा। उड़ने वाला पिंजरे में नहीं आता। तो पिंजरा छोड़ दिया! अभी क्या करेंगी? नौकरी करेंगी? ताज पहनेंगी या टोकरी उठायेंगी? जहाँ ताज होगा वहाँ टोकरी चलेगी नहीं। ताज उतारेंगी तब टोकरी रख सकेंगी। टोकरी रखेंगी तो ताज गिर जायेगा। तो ताजधारी बनना है या टोकरीधारी। अभी विश्व की सेवा की ज़िम्मेवारी का ताज और भविष्य रत्न जड़ित ताज। अभी विश्व की सेवा का ताज पहनो तो विश्व आपको धन्य आत्मा, महान आत्मा माने। इतना बड़ा ताज पहनने वाले टोकरी क्या उठायेंगे! 63 जन्म तो टोकरी उठाते रहे, अब ताज मिलता है तो ताज पहनना चाहिए ना! क्या समझती हो? दिल नहीं है लेकिन करना पड़ता है! क्या ऐसे सरकमस्टांस हैं? धीरे-धीरे लौकिक को सन्तुष्ट करते अपने को निर्बन्धन कर सकती हो। निर्बन्धन होने का प्लैन बनाओ। बेहद सेवा का लक्ष्य रखो तो हृद के बन्धन स्वतः टूट जायेंगे। लक्ष्य दो तरफ का होता

है तो लौकिक अलौकिक दोनों में सफल नहीं हो सकते। लक्ष्य क्लियर हो तो लौकिक में भी मदद मिलती है। निमित्त मात्र लौकिक, लेकिन बुद्धि में अलौकिक सेवा हो तो मजबूरी ही मुहब्बत के आगे बदल जाती है।

2) सभी कुमारियों ने अपनी तकदीर का फैसला कर लिया है या करना है? जितना समय अपने जीवन के फैसले में लगाती हो उतना प्राप्ति का समय चला जाता है इसलिए फैसला करने में समय नहीं गंवाना चाहिए। सोचा और किया - इसको कहा जाता है नम्बरवन सौदा करने वाले। सेकेण्ड में फैसला करने वाले गोल्डन मैडल लेते हैं। सोच-सोचकर फैसला करने वाले सिल्वर मैडल लेते और सोचकर भी फैसला नहीं कर पाते वह कापर वाले हो गये। आप सब तो गोल्डन मैडल वाले हो ना! जब गोल्डन एज में जाना है तो गोल्डन मैडल चाहिए ना। राम सीता बनने में कोई हाथ नहीं उठाते। लक्ष्मी नारायण तो गोल्डन एज्ड हैं ना। तो सभी ने अपने तकदीर की लकीर ऐसी खींच ली है या कभी-कभी हिम्मत नहीं होती। सदा उमंग-उत्साह में उड़ने वाली, कुछ भी हो लेकिन अपनी हिम्मत नहीं छोड़ना। दूसरे की कमजोरी देखकर स्वयं दिलशिकस्त नहीं होना। पता नहीं हमारा तो ऐसा नहीं होगा! अगर एक कोई खड्डे में गिरता है तो दूसरा क्या करेगा? खुद गिरेगा या उसको बचाने की कोशिश करेगा? इसलिए कभी भी दिलशिकस्त नहीं होना। सदा उमंग उत्साह के पंखों से उड़ते रहना। किसी भी आकर्षण में नहीं आना। शिकारी जब फँसाते हैं तो अच्छा-अच्छा दाना डाल देते हैं। माया भी कभी ऐसे करती है इसलिए सदा उड़ती कला में रहना तो सेफ रहेंगी। पीछे की बात सोचना, कमजोरी की बात सोचना पीछे देखना है, पीछे देखना अर्थात् रावण का आना।

3) शक्ति सेना हो ना! सबके हाथ में विजय का झण्डा है। विश्व के ऊपर विजय का झण्डा है या सिर्फ स्टेट के ऊपर है? विश्व के अधिकारी बनने वाले विश्व सेवाधारी होंगे। हृद के सेवाधारी नहीं। बेहद के सेवाधारी, जहाँ भी जायें वहाँ सेवा करेंगे। तो ऐसे बेहद सेवा के लिए तैयार हो? विश्व की शक्तियाँ हो तो स्वयं ही आफर करो। 2 मास 6 मास की छुट्टी लेकर ट्रायल करो। एक कदम बढ़ायेँगी तो 10 कदम बढ़ जायेंगे, एक दो मास निकल कर अनुभव करो। जब कोई बढ़िया चीज से दिल लग जाती है तो घटिया स्वतः छूट जाती है। ऐसे ट्रायल करो। संगमयुग आगे बढ़ने का समय है। ब्रह्माकुमारी बन गयी, ज्ञान स्वरूप बन गयी, यह तो बहुत समय हो गया। अब आगे बढ़ो, कुछ तो आगे कदम बढ़ाओ, वहाँ ही नहीं ठहरो। कमजोर को नहीं देखो। शक्तियों को देखो, बकरियों को क्यों देखते! बकरियों को देखने से खुद का भी कांध नीचे हो जाता। डर लगता है - पता नहीं क्या होगा? कमजोर को देखने से डरते हो इसलिए उन्हें मत देखो। शक्तियों को देखो तो डर निकल जायेगा।

**वरदान:- सदा हज़ूर को हाज़िर समझ साथ का अनुभव करने वाले कम्बाइन्ड रूपधारी भव**

बच्चे जब भी स्नेह से बाप को याद करते हैं तो समीप और साथ का अनुभव करते हैं। दिल से बाबा कहा और दिलाराम हाज़िर इसीलिए कहते हैं हज़ूर हाज़िर है। हाज़िरा हज़ूर है। स्नेह की विधि से हर स्थान पर हर एक के पास हज़ूर हाज़िर हो जाते हैं, अनुभवी ही इस अनुभव को जानते हैं। गाया हुआ है – करनकरावनहार तो करनहार और करावनहार कम्बाइन्ड हो गया। ऐसे कम्बाइन्ड रूपधारी सदा साथ का अनुभव करते हैं।

**स्लोगन:- मन को सदा रूहानी मौज में रखना-यही जीवन जीने की कला है।**